Vol. 2, No. 3 (July 2013) P. 16-20

Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

"सूफी संगीत का विवेचनात्मक अध्ययन"

डा० नित्याप्रिया श्रीवास्तव
E mail: nityapriya2215@rediffmail.com

'सूफी' की उत्पत्ति पांचवी शताब्दी में मध्य एशिया से मानी जाती है। मध्यकाल में प्रचलित सूफी धारा में गायन की परम्पराएँ अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। इसके पृष्ठभूमि में यह विवेचित करना अप्रासंगिक न होगा कि, सूफी के वास्तविक स्वरुप के अंतर्गत, सूफी की अवधारणा, उद्भव एवं विकास तथा महत्व की व्याख्या का प्रगटीकरण, वस्तुस्थिति को स्वतः स्पष्ट कर देता है। इस परिप्रेक्ष्य में सर्वप्रथम सूफी के वास्तविक अर्थ की विवेचना करेंगे जिसके अन्तर्गत 'तसव्वुफ' जो कि इस्लामी ज्ञान की एक शाखा है और इसका ध्यान मुस्लिम समुदाय के आध्यात्मिक विकास पर केंद्रित है, इसके अनुयायियों को वर्तमान समय में 'सूफी' कहते हैं। सूफी शब्द की उत्पत्ति के विषय में कई मत सामने आते हैं–

1. प्रथम मतानुसार 'सूफी' की उत्पत्ति 'अरबी' भाषा के "सफ" शब्द से विकसित मानी जाती है, जिसका अर्थ–'ऊन या मोटा कपड़ा' होता है। ऐसा माना जाता है कि 'पैगम्बर मुहम्मद' के अनुयायियों का एक वर्ग प्रारंभिक काल में भेड़ और बकरी के ऊन से बने कपड़ों को पहनता था एवं निरंतर अल्लाह की इबादत में तल्लीन रहा करता था, जिन्हें सांसारिक वस्तुओं का मोह नहीं था और वे अत्यंत साधारण जीवन व्यतीत करते थे। उनका तादातम्य सदैव अल्लाह से जुड़ा रहता था, वे लोग 'सूफी' कहलाये। [1],[4],[8]

2. द्वितीय मतानुसार 'सूफी' की उत्पत्ति 'फारसी' भाषा के 'सफा' शब्द से मानी जाती है, जिसका अर्थ – 'शुद्धता और पवित्रता' से होता है। कुछ विद्वानों ने सूफी की व्याख्या एक ऐसी परम्परा के रूप में की है, जिसका लक्ष्य सभी के दिलों को स्वच्छ बनाकर तथा अन्य सांसारिक वस्तुओं से विमुख करके, ईश्वर की ओर मोड़ना था और इसी कारण इन्हें 'सूफी' कहा जाने लगा। [4],[8]

3. 'सूफी' शब्द 'सोफिया' से उद्धृत भी माना जाता है, जिसका अर्थ 'ज्ञान' से है। इस आधार पर सूफियों को ज्ञानी या परमज्ञानी की संज्ञा देना अतिश्योक्ति न होगी। [3a],[7],[8]

4. कुछ दूसरे लोग इस शब्द को इसी प्रकार 'सफा' से बना हुआ मानते हैं जिसका अर्थ 'चबूतरा' हुआ करता है, जो विशेषतया 'अरब' देश की किसी 'मस्जिद' के प्रांगन में बने हुए उस ऊँचे स्थल को सूचित करता है जहां पर हजरत मुहम्मद के कतिपय प्रियपात्र सहचर प्रायः बैठा करते थे । इन लोगों का अधिक समय परमात्मा के चिंतन में ही व्यतीत होता था और सूफियों को यह नाम उन्हीं के स्वभाव–सदृश्य के कारण दिया गया था । [1],[2],[8],[9]

5. कुछ विद्वानों का कहना है की 'सूफी' शब्द 'सफ' से निकला है जिसका अर्थ 'सबसे आगे की पंक्ति' अथवा 'प्रथम श्रेणी' किया जाता है और इसके अनुसार सूफी केवल उन्हीं व्यक्तियों को कहा जा सकता है, जो कयामत के दिन ईश्वर के प्रियपात्र होने के कारण सबसे आगे खड़े किए जायेंगे और जिनमे इस बात की ओरे संकेत करने के लिए कुछ विशेषता भी होगी । [1],[6],[7],[8]

'सूफी' का मूल उद्देश्य –

'इश्क मिज़ाजी' (लौकिक प्रेम) से 'इश्क हक़ीकी' (अलौकिक प्रेम) की ओर ले जाना है अर्थात सूफी 'लौकिकता' से 'अलौकिकता' की ओर जाने वाला पवित्र और सरल मार्ग है जो की व्यक्ति को अल्लाह से सीधा जोड़ने का कार्य करता है। इसमें ईश्वर तक पहुंचने तथा तारतम्य स्थापित करने के लिए संगीत, नृत्य तथा अन्य साधनों का इस्तेमाल किया गया। सूफी संतो ने प्रेम की सुन्दरता को

आध्यात्मिकता के साथ कुछ इस प्रकार जोड़ा कि न केवल खास वर्ग बल्कि साधारण जन भी इसके प्रभाव से अछूता न रहा।

सूफी संप्रदाय की सांगीतिक अवधारणा–

सूफी संप्रदाय की विभिन्न शाखाएं जिन्हें "तरीका" भी कहा जाता है, उनमें संगीत के प्रति दो अवधारणाएं पाई जाती हैं –

1. प्रथम अवधारणानुसार सूफी संप्रदाय के "नक्शबंदी" एवं "कादरी" तरीके आते हैं, जोकि संगीत के पुरजोर विरोधी रहे हैं। इनके अनुसार संगीत इस्लामिक कर्तव्यों के अनुपालन में अवरोध उत्पन्न करता है। जब कोई व्यक्ति संगीत में लीन हो जाता तो वह अपने मूल कर्तव्यों से भटक जाता है। संगीत के प्रति इनकी उदासीनता का यही प्रमुख कारण माना जाता है। [4],[10]

2. दूसरे मतानुसार सूफी संप्रदाय के "मेवलेवी" एवं "चिश्ती" तरीके आते हैं, जोकि संगीत के समर्थक रहे हैं, इन्होनें खुदा की इबादत के लिए संगीत को बहुत शांतिपूर्ण एवं पवित्र मार्ग माना। इनके अनुसार संगीत एक ऐसा तरीका है, जो कि इंसान का तादात्म्य ईश्वर से सीधे जोड़ने में सहायक है, क्योंकि संगीत में डूब कर आध्यात्मिक तरीके से की गई इबादत व्यक्ति को ईश्वर के सन्निकट लाती है। [11]

विभिन्न अवसरों में सूफी संगीत–

1. **मव्लिद अथवा मव्लिद–उन–नबी**– यह उत्सव मोहम्मद साहब के जन्मदिवस के खास अवसर पर मनाया जाता है। मिस्र देश के कई भागों में इसे सूफी संतो के जन्मदिवस के रूप में भी मनाया जाता है। इस सुअवसर पर "पैगम्बर मोहम्मद" की शान में बहुत ही विशिष्ट संगीत गाया जाता है जिसे 'नात' कहा जाता है। [3b]

2. **समां अथवा सेमा–** सूफी गायन में समां का विशिष्ट महत्व होता है। समां का तात्पर्य 'सुनने' से है। समां में मुख्य आकर्षण 'धिक्र' होता है । 'धिक्र' का अर्थ 'स्मरण' होता है। इसके अंतर्गत गायन,वादन,नृत्य एवं अन्य कई धार्मिक अनुष्ठानो का आयोजन होता है। समां का मुख्य अंग गायन होता है, इसमें मुख्य रूप से 'कॉल' , 'कलबना', 'कव्वाली' और 'काफी' गायी जाती है, जो की उस समां के आयोजन से सम्बंधित तरीके के संस्थापक अथवा वर्तमान तरीका प्रमुख के लिखे कलामों का सांगीतिक प्रस्तुतीकरण होता है। समां के आयोजन का मुख्य उद्देश्य 'वज्द' की स्थिति प्राप्त करना होता है जो की एक प्रकार की समाधि जैसी अवस्था होती है। इस 'वज्द' की अवस्था में कई अप्रत्याशित अवस्थाएं देखी जा सकती है, जिसमे एक विशेष प्रकार की उत्तेजना ,नृत्य एवं आन्दोलन इत्यादि सम्मिलित हैं। इसके अलावा समां में एक अन्य अवस्था प्राप्त करने की भी लालसा होती है जिसे "खम्र" अथवा 'अध्यात्मिक मदोन्मतता' कहा जाता है और अंततोगत्वा 'वज्द' के माध्यम से अध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति की जाती है। इन सभी अवस्थाओं की प्राप्ति में संगीत एवं नृत्य का विशेष योगदान होता है, जिसके माध्यम से उसकी मधुरता में लीन होकर सूफी साधक आध्यामिक ज्ञान की चरमोत्कर्ष स्थिति को प्राप्त करता है । [3c]

3. **हद्र अथवा देव्रान–** यह एक विशेष प्रकार का अनुष्ठान होता है जो प्रायः बृहस्पतिवार की रात्रि की प्रार्थना अथवा शुक्रवार को जुमे की नमाज के पश्चात अथवा कुछ अन्य विशेष अवसरों पर आयोजित होता है। यह अनुष्ठान तुरकिस्तान में अत्यधिक प्रचिलित है और यहाँ इसे 'देव्रान' के नाम से जाना जाता है। इस अनुष्ठान का आयोजन मुख्यतः खल्वाती, कादिरिया, शाधिली एवं रिफाई तरीकों में किया जाता है। इस अवसर पर कई प्रकार के धर्मोपदेश, सामूहिक वंदना, कुरान

की आयतों का उच्चारण एवं लयबद्ध मंत्रजाप किया जाता है, जो कुरान अथवा अन्य सूफी सन्तों द्वारा रचित दिवानों से उद्धृत होती है। [3d]

4. **उर्स–** प्रतिवर्ष किसी सूफी संत की दरगाह पर आयोजित किये जाने वाले उत्सव को कहते हैं। इस अरबी शब्द का अर्थ 'विवाह' से होता है। ऐसी मान्यता है की किसी सूफी संत की मृत्यु जिसे 'विसाल' भी कहते हैं, उस दिन दोनों प्रेमियों का मिलाप होता है, उस सूफी संत की आत्मा का परमात्मा से मिलन हो जाता है जोकि विवाह का ही स्वरुप होता है। अतः सूफी संत की पुण्यतिथि को विवाह की सालगिरह के रूप में मनाया जाता है। इस शुभ अवसर पर आयोजित अनुष्ठानों को प्रायः दरगाह के संरक्षकों द्वारा निभाया जाता है, और इनमें आमतौर पर धार्मिक संगीत जैसे कव्वाली, काफी इत्यादि का गायन शामिल होता है । [3e]

सूफी संगीत के विभिन्न स्वरुप –

सूफी संगीत के विभिन्न स्वरूपों में मुख्यतः निम्नलिखित विधाएं पाई जाती हैं:

1. **मंजुमा–**यह एक अरबी भाषा से उद्दृत शब्द है जिसका अर्थ 'काव्य में पिरोना' होता है। इनमे धार्मिक विषयों से सम्बंधित काव्यों को गाया जाता है, जिनमें प्रायः पैगम्बरों की प्रार्थना (तवासोलात), पैगम्बरों की प्रशंसा (मध–अन–नबी),पैगम्बरों के जीवन से जुडी अन्य बातों (मव्लिद–अन–मिराग) और अल्लाह की प्रशंसा (ताना–अल्लाह) को लयबद्ध तरीके से गाया जाता है। मंजुमा गीतों को विभिन्न अवसरों जैसे 'मव्लिद' (पैगम्बर मुहम्मद और अन्य सूफी सन्तों के जन्मदिवस), 'जियारा' (धार्मिक तीर्थों), हद्र एवं 'धिक्र' सभाओं के अवसरों पर भी एकल एवं सामूहिक रूप से गया जाता है। यह गीत मुख्यतया एक प्रमुख गायक एवं उसके सहयोगियों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। सह–कलाकार कोरस गाकर मुख्य गायक को गीत के प्रस्तुतीकरण में सहयोग करते है। इन सह–कलाकारों को 'दरेसा' कहा जाता है, जिसका अर्थ 'धार्मिक छात्र' होता है। इथियोपिया देश में यह बहुत प्रचिलित है और यहाँ इसके और भी कई स्वरुप देखने को मिलते हैं, जिनमे 'दरेसा' प्रायः ,'देब्बे'(एक विशेष प्रकार का ड्रम), ताली , नृत्य के द्वारा भी मुख्य गायक को सहयोग प्रदान करते हैं। कभी कभी इसे बिना सहयोगियों के भी प्रस्तुत किया जाता है जिसे 'एन्गुर्गुरो' कहते हैं। [3f]

2. **कव्वाली –** कव्वाली एक प्रकार सूफी भक्ति गीत होता है। जिसे बेहद भाव पूर्ण तरीके से गाया जाता है जिसकी शुरुआत बेहद शांत ढंग से कुछ दोहे के साथ करते हैं फिर धीरे–धीरे आगे बढ़ते हैं, भक्तिभाव से ओतप्रोत अपनी इस प्रस्तुति को उस अवस्था तक ले जाते है जब अपने–पराये कि अवस्था से भिन्न एकेश्वर के ओर श्रोता जाने लगते हैं, और साथ ही प्रेम की पराकाष्ठा की अनुभूति करते हैं। यह संगीत मुख्यतया दरगाहों पर गाया जाता। [12],[13]

3. **कौल–कलबना–** यह एक 'अरबी' शब्द है जिसका अर्थ है 'कहना या कथन'। यह 'कव्वाली' से बहुत समानता रखता है। इसमें 'मोहम्मद साहेब' के कथनों या उपदेशों को काव्य के रूप में गाया जाता है। [13]

4. **हम्द–** यह एक प्रकार का गान है, जो परम्परागत तरीके से कव्वाली से पहले गाया जाता है, इसमें मूल रूप से अल्लाह की इबादत की जाती है। [13]

5. **नात–** यह हम्द के बाद गाया जाता है, इसे पैगम्बर मोहम्मद की शान में गाया जाता है ।[13]

6. **मंकबत–**यह गीत इमाम अली की प्रसंशा में गाया जाता है।[3g]

7. **मर्सिया** –यह विरह गीत होता है जो इमाम हुसैन व उनके परिवार की करबला में हुई मृत्यु के दुःख के रूप में गाया जाता है । [14]

8. **ग़ज़ल** –यह अरबी भाषा से लिया गया शब्द है इसके अन्तर्गत प्रेमी–प्रेमिका के विछोह के भावों को एक अलग ही अवस्था में जाकर महसूस करते हैं। अर्थात इस गीत में वियोग के भावों का एहसास स्पष्ट रूप मे दीख पड़ता है । [15]

9. **अनाशीद**– यह एक विशेष प्रकार का गायन होता है जो मलेशिया, इंडोनेशिया और तुर्किस्तान में अत्यधिक प्रचलित है। अनाशिद बहुत प्रसिद्ध गायन है इसमें प्रयुक्त सभी पद इस्लामिक मान्यताओं, इतिहास, धर्म एवम समसामयिक सूफी घटनाओं पर आधारित होते हैं। इसमें केवल 'ढफ' वाद्य का ही प्रयोग किया जाता है जो काफी कुछ भारतीय ढपली से मिलता जुलता है पर उसमे घंटियां नहीं लगी होती है। [3h],[16]

10. **काफी** – यह सूफी गायन का बेहद महत्त्वपूर्ण तरीका है, इसमें एक मुख्य गायक होता है तथा उसके साथ कुछ सहयोगी वादक होते हैं, जिनमें प्रमुख रूप से जो वाद्य आते है वे हैं–तबला, हारमोनियम, ढोलक यह सब काफी गायन में प्रयोग किए जाने वाले वाद्य है। [3i]

11. **मदीह–नवाबी**– यह अरबी संगीत का मुख्य अंग और अरब में आयोजित होने वाली सूफी सभाओं में अत्यधिक प्रचलित है। इन गीतों के माध्यम से पैगम्बर मुहम्मद एवं उनके परिवार के सदस्यों की सराहना या प्रशंसा की जाती है। इन गीतों की शुरुआत मुहम्मद साहब की मृत्यु के बाद से मानी जाती है, जिसमें उनकी प्रशंसा गीतों को इस भावना के साथ गाया जाता है, कि वे अभी भी जीवित है। इसमें एक मुख्य गायक होता है जिसके साथ आठ से लेकर सोलह सहगायक होते हैं। इनमें प्रशंसा के साथ–साथ अन्य भावों जैसे तन्जिलाह (रहस्योद्घाटन), इब्तिहल(प्रार्थना) और तवस्सुल (गुहार) का भी समावेश होता है और कभी कभी कोरस के साथ–साथ एक छोटे आकार के ड्रम का भी उपयोग किया जाता है । [3j]

12. **तराना**– तराना के आविष्कारक हजरत अमीर खुसरो (1253–1325 ईसवी) माने जाते हैं । इनमें कुछ फारसी और अरबी शब्दों के संयोजन को मध्य एवं द्रुत लय में भिन्न भिन्न रागों में गाया जाता है। मुख्यरूप से भारत एवं पकिस्तान में इसका बहुतायत में सूफी सभाओं में प्रस्तुतीकरण होता है। [3k]

सूफी संगीत में प्रयुक्त होने वाले वाद्ययंत्र :–

इस्लाम में संगीत एवं वाद्यों का उपयोग बड़ा ही विवादस्पद रहा है, और सूफी संगीत भी इससे अछूता नहीं है। कुछ अवनद्ध वाद्यों को छोड़ कर सूफी संगीत में अन्य वाद्यों के उपयोग की अनुमति नहीं होती है। सूफी संगीत में उपयोग में आने वाले कुछ मुख्य वाद्यों में "नेय" और "बेन्दाजिर" का ही बहुतायत में उपयोग होता है। इसके अतिरिक्त ढोलक, हारमोनियम और तबला का उपयोग भारतीय उपमहाद्वीप में होने वाले सूफी संगीत के आयोजनों में बहुतायत में देखने को मिलता है।

उपरोक्त विषय से स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि 'सूफी संगीत' के विभिन्न स्वरूपों में खुदा की इबादत की जाती थी और इसकी सहायता से सूफी साधक, ध्यान की विभिन्न अवस्थाओं को सहज रूप से महसूस कर सकता था। 'सूफी' लोग इस्लाम की बातों को जनसाधारण तक पहुचाना चाहते थे और सूफी संगीत ने उनके इस उद्देश्य की पूर्ति, बड़े ही सहज और प्रभावी ढंग से की, जिसके कारण आज

यह न केवल पश्चिमी देशों में बल्कि मध्य और दक्षिण–एशिया के देशों और यूरोप में अपना विशिष्ट स्थान बनाने में कामयाब रहा है।

संदर्भ–

[1] जायसी के परिवर्ती हिंदी सूफी कवि और काव्य,–डा० सरला शुक्ल,1956, पृ. 42,55,56,57

[2] सूफी काव्य संग्रह– परशुराम चतुर्वेदी,1956, पृ. 2-7

[3] विकिपीडिया:

3a- https://en.wikipedia.org/wiki/Sufism

3b- http://en.wikipedia.org/wiki/Mawlid

3c- http://en.wikipedia.org/wiki/Sama_(Sufism)

3d- http://en.wikipedia.org/wiki/Ha%E1%B8%8Dra

3e- http://en.wikipedia.org/wiki/Urs

3f- http://en.wikipedia.org/wiki/Sheikh_Muhammad_Awol

3g- https://en.wikipedia.org/wiki/Manqabat

3h- https://en.wikipedia.org/wiki/Nasheed

3i- http://en.wikipedia.org/wiki/Kafi

3j- https://en.wikipedia.org/wiki/Madih_nabawi

3k- http://en.wikipedia.org/wiki/Tarana

[4] मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति– डॉ फणीन्द्र नाथ ओझा,1988,पृ. 38,50

[5] हिंदी सूफी काव्य में प्रतीक योजना –सरोजिनी पंडया,1971, पृ. 271

[6] सम्मलेन पत्रिका–रामप्रसाद त्रिपाठी,संस्करण 52,1966,पृ. 21

[7] साहित्य परिसीलन–रामेश्वर नाथ भार्गव, 1968,पृ. 3–4

[8] पद्मावत और मधुमालती के सन्दर्भ में जायसी और मंझन का तुलनात्मक अध्ययन–पवन कुमार 1986, पृ. 1–10

[9] निर्गुण काव्य पर सूफी प्रभाव– रमापति रॉय शर्मा, 1977, पृ. 52,95

[10] हिंदी साहित्य भाग २ – धीरेन्द्र वर्मा, व्रजेश्वर वर्मा, 1959, पृ. 17–27

[11] ध्रुपद और उसका विकास, भाग १–कैलाश चन्द्रदेव ब्रहस्पति ,1976, पृ.44

[12] रागांजलि–जगदीश मोहन एवं रजिनी प्रताप,2010, पृ.12

[13] पूर्वाग्रह पत्रिका , संस्करण 48–53,1982,पृ.110–112

[14] पर्यटन सिद्धांत और प्रबंधन तथा भारत में पर्यटन–शिवस्वरूप साहा, 2006,पृ. 368

[15] ग़ज़ल–पंकज शर्मा होशिआर्पुरी, 2011, पृ .IV

[16] तुर्क कालीन भारत में मुस्लिम दासता,1000 से 1414 तक –शीला चतुर्वेदी,1982, पृ.81

.